[illegible]

काव्यशास्त्र मे 'रस' कहल आनन्द, निर्विघ्न, तन्मय आदि नकर अनुभूति के अलौकिक तथा अनिर्वचनीय आनन्द, आदि होइछ। यही आनन्द के 'ब्रह्मानन्द सहोदर' कहल गेल अछि। रसक आस्वाद अनुभूति [illegible] अछि। ई अनुभूति दू प्रकारक होइछ — प्रत्यक्षानुभूति आ [illegible] रसानुभूति। मनुष्य अपन व्यक्तिगत जीवन मे प्रेम, करुणा, घृणादि भावक जे अनुभूति करैछ, ओकरा प्रत्यक्षानुभूति कहल जाइछ तथा काव्य वा नाटकादि के पढ़ला वा देखला सँ जे हृदय मे प्रेम, करुणा, घृणादि भाव जागृत होइछ ओकरा रसानुभूति कहल जाइछ।

काव्य मे रसक सर्वाधिक महत्व देल गेल अछि। बृहदारण्यक उपनिषद मे रसक महत्व प्रतिपादित करैत कहल गेल अछि जे आत्मा मात्र आत्माक दर्शन मनन चिन्तन सँ रस किछु प्राप्त कए लैछ, ओहिना काव्य मे रस के सेहो आत्मा कहल गेल अछि। जहिना आध्यात्मिक ज्ञान मात्र सँ [illegible] ज्ञान [illegible] तत्वक ज्ञान वा दर्शन भए जाइछ।

रसक परिभाषा दैत भरत मुनि कहलनि अछि — "विभावानुभाव व्यभिचारि-संयोगाद्रसनिष्पत्तिः" अर्थात विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भावक संयोग सँ रसक निष्पत्ति होइछ। आचार्य विश्वनाथ सेहो एकरा स्पष्ट करैत

Scanned with CamScanner

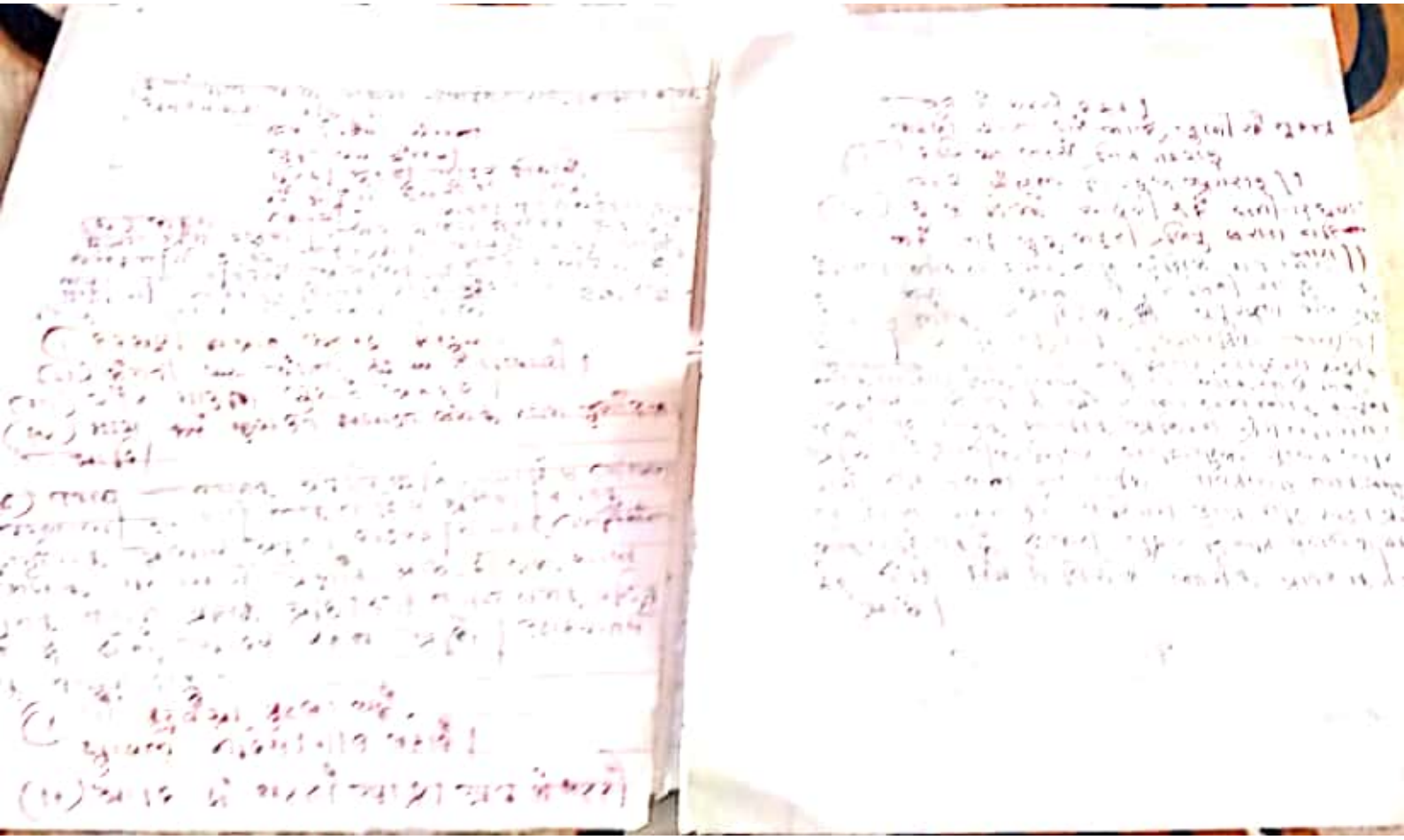

Scanned with CamScanner

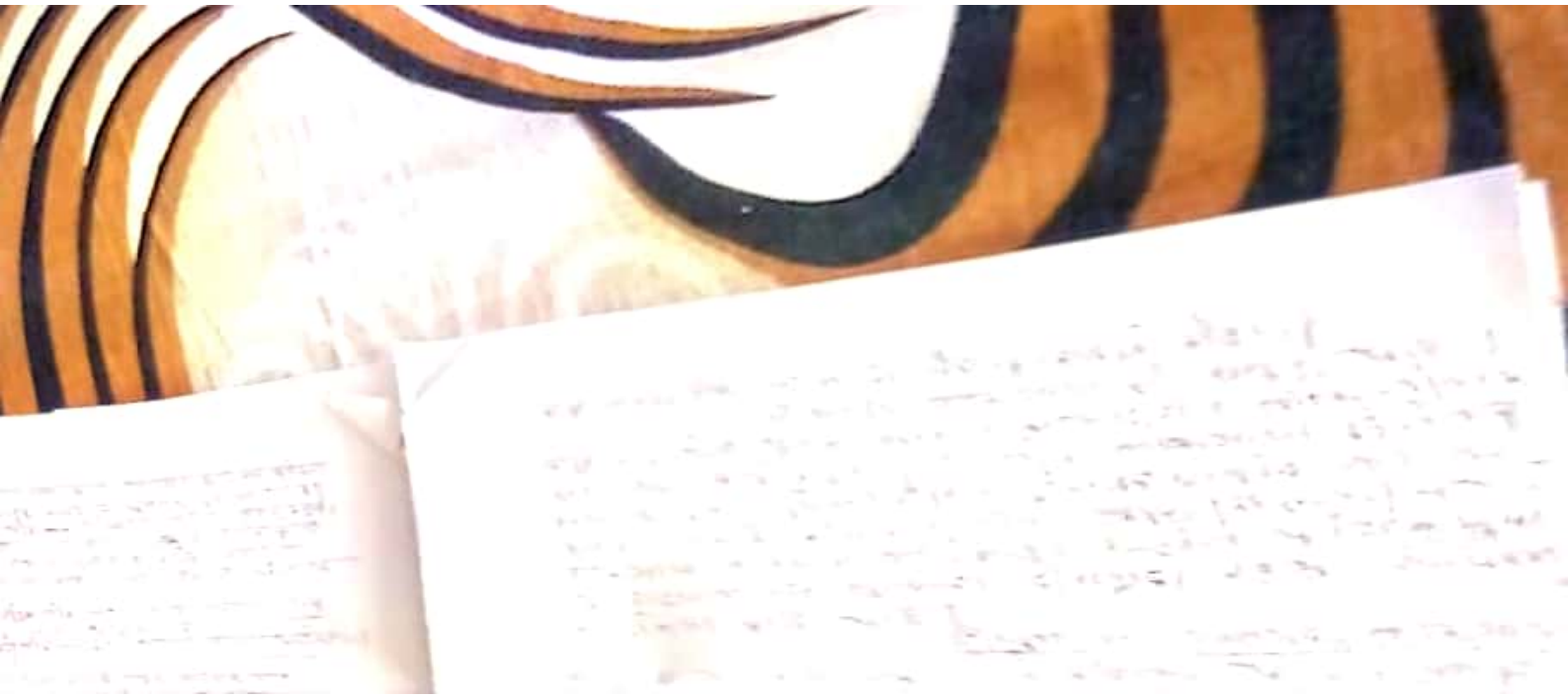

Scanned with CamScanner

मैथिली मे लिंग - वचन प्रयोग एवं स्थिति पर विचार करू ?

उत्तर - अनुमान कएल जाइत अछि जे प्राचीन भारतीय आर्यभाषा सँ बहुत पहिने कोनो वाक्य बोध ओकर लिंग, मुख्य विशेषतावैक संग होइत छल। प्राचीन मैथिली मे लिंगक कोनो स्पष्ट बोधक स्थिति छल जे लिंगक ओहि रूप आई स्वच्छ बोधित होइत।

(1) स्त्रीलिंग शब्दक प्राय: सब अकारान्त विशेषता (कृदन्त क्रियापद सहित) इकारान्त भए जाइत अछि -

यथा - बाढ़लि पिरिति ... दुरि गेल
... रहि ताकु ... हरि

वर्णरत्नाकर मे तद्भव तत्सम विशेषणा मे संज्ञा स्त्री० प्रत्यय जोड़ैत अछि।

जेना - नायिका - मन्दि होथि

एतए ध्यातव्य अछि जे नव्य मैथिली मे विशुद्ध मैथिलीक ... ...

... अकारान्त विशेषण मे स्त्री०

Date: / /

(इ) कें प्रत्ययांत सम्बन्ध कारक यद्यपि स्वरूपतः विशेषण अछि तथापि रूढ़ि मे कोनो समय स्त्री प्रत्ययांत नहि अछि जेना—

(उ) कर्मणि प्रयोग मे कृदन्त क्रियापद लिंग कर्मानुसारी होइत अछि। जेना
पंकज – मधु पिबि मधुकर।

३.६.७ पाणारिणि प्रति

नव्य मैथिली मे व्याकरणिक लिंग समाप्त भऽ चुकल अछि। किन्तु वास्तविक लिंग विशेषण एवं कृदन्त मे प्रतिफलित होइत अछि जेना

पु० छोट सुकुमार गौर वर्णसंद शील आएल छओताह

स्त्री० छोटि सुकुमारि गौरि सुमति शीलि आएलि छओतीह

परन्तु वर्तमान ... मे कृत कर्म रूप विशेषण जे नव्य मैथिली मे स्त्री० प्रत्यय लगैत अछि जेना—

उदा— ऊँच, नीच, सोझ, टेढ़, दाहिन